

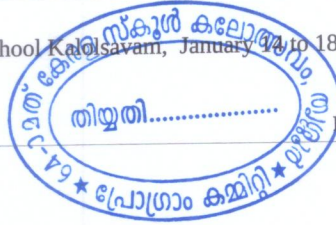


नारियाँ - नौकरी क्षेत्रों में

मनुष्य का जीवन अनुभवों और शिक्षाओं से भरी एक लंबी यात्रा है। यह लहरों से भरे सागर की तरह है, जिसमें सुरक्षित किनारे तक पहुँचने के लिए उसे बुद्धि और दृढ़ संकल्प का आवश्यकता होती है। मनुष्य के बीच "महिलाओं" और "पुरुष" जैसे भेदभाव अब भी मौजूद है। हर पीढ़ी अपने से पहले की पीढ़ी से अलग समय में जीती है। नए चुनौतियों का सामना करती है। इसलिए, उसे अधिक जागरूक, विचार-शील और स्वतंत्र स्वनात्मक होना चाहिए। आज दुनिया में जो विकास हो रहा है, उसने जीवन के किसी भी पहलू को अछूता नहीं छोड़ा है। और उस विकास से नारियों को अपना हक मिलने शुरू हुआ है। ज्ञान सबसे बड़ा हथियार है जो ~~स्त्रियों~~ स्त्रियों को अपने हक के लिए लड़ने का शक्ति दिया है। ज्ञान किसी भी ~~आर्थिक~~ मुश्किल काम को आसानी से तोड़ना आता है। जैसे कि "अरस्तू" ने कहा: "ज्ञान के बिना जीवन



Item Code: 645



Participant Code: 037

गहरे अंधकार के समान है। इसलिए, ज्ञान और विचार ही वह प्रकाश है, जो आज कल मनुष्य को, खास करके महिलाओं को अज्ञानता और भडकाव की अंधेरी राहों से बचाते हैं। इसी आधार पर, आज के ज़माने के एक महत्वपूर्ण विषय, "नारियों - नौकरी क्षेत्रों में" के बारे में अधिक जानना आवश्यक है। यह व्यक्तियों और समाज पर भी गहरा प्रभाव डालता है। इसलिए, इसपर प्रकाश डालना चाहिए ताकि इस विषय के अर्थ और महत्व को समझ सकें।

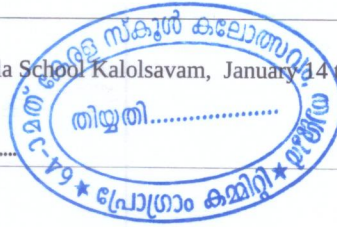
आज के नई पीढ़ी एक ऐसे समय में जी रही है जहाँ तकनीकी विकास ने जीवन के हर क्षेत्र को पूरी तरह नरह बदल दिया है। इस विकास से पुरुष से भी ज्यादा फायदा नारियों को मिला है। उन्होंने अपने आप के लिए जीना शुरू कर दिया है।

पहले और आज, दोनों के ज़माने में कई ज्यादा फर्क हैं। महिलाओं तकनीकी विकास के साथ-साथ अपने आप के लिए कुछ करने के लिए आगे आ चुका है। ~~भारत~~ भारत स्वातंत्रा के पहले ~~और~~ नारियों ~~मर्दी~~ मर्दों का गुलाम माना जाता था। समाज के डर से उन महिलाओं भी अपने के लिए आवाज नहीं ड़ाया था।

भारत स्वातंत्रा के समय "महान्मा गांधी" की मेहनत की वजह से नारियों अपने चार दिवसों से बाहर आया और अपने देश की स्वातंत्रा के लिए आवाज उठाया। उन स्त्रियों ने निभाई हुई हिम्मत की वजह से आज भी नारियों उन लोगों को अपना मिसाल मानता है।

पुरुषों ने यह मानता था कि महिलाएँ बर्तन साफ करने के लिए और उनके बच्चों को जन्म देने के लिए ही हैं। लेकिन आज के हाल के हिसाब से बहुत ज्यादा लोग नौकरी करना शुरू किया है जिसको मिसाल बनाकर आज के छोटे लड़कियाँ भी जिंदगी में कुछ करना चाह रहा है।

आज के जमाने में महिलाएँ हर एक क्षेत्र में मौजूद हैं। लेकिन फिर भी पुरुषों के मौजूद देखते तो यह साबित हो जाता है कि अब भी बहुत ज्यादा महिलाएँ हैं जो अभी भी अपने घरों से बाहर नहीं निकला हुआ है। सामान्य बोध से ये देखा जाय तो इस समस्या का कारण यही मिलेगा कि औरत कुछ करना नहीं चाहते हैं। लेकिन "सोशियोलॉजिकल इमेजीन" से देखा जाय तो इसका कारण यही मिलेगा



2021 के एक अध्ययन से यह साबित हुआ है कि "भारत जनता पॉपुलेशन के हिसाब से महिलाएं पुरुषों से भी ज्यादा है। फिर भी महिला पुलिस फोर्स में आने वालों में सिर्फ और सिर्फ 10% ही हैं हैं। इसका मतलब यह है कि आज भी दुनिया में ऐसे लोग हैं जो अपने हक्क पाने के लिए, और अपने तरीके से अपने जीवन जीने के लिए आवाज उठाने पर डर रहे हैं।

"बी. डी बदुतिरीप्पाड" के प्रशस्त नाटक "अडुक्कल-पिल निन्न अरंगलेक" में स्त्री स्त्रियों को अपने चार दिवारों के अंदर से बाहर आने का हिम्मत देता है। और उस नाटक के फल से "कैरल" में महिलाएं कई ज्यादा नौकरी करना शुरू किया गया है। और इसी विकास ने "कैरल" को भारत के सबसे अच्छे विकसित राज्य बना दिया है। इन सबी के फल से आज "कैरल" आर्थिक और सामाजिक रूप से कई ज्यादा आगे निकल चुका है।

आज कल कई घरों में महिलाएं नौकरी करने वाले होता है। जहाँ तक अब "नारियों" "भारतीय आर्मी" में भी शामिल हो रहा है। और



इस बात के सबसे बड़ा सबूत है "भारत, केरल, वाघनाद" में हुवा कर्मी। जब पद्यविरण ने उन मायूमों को धमकाया, तब "भारतीय सेना" में से एक शेरनी वहाँ एक पुल चुरकियों में बनाने का नेत्रत्व नेत्रत्व दिया था। उसके साथ-साथ "पहलगाम" में हुवा "आतंकवादी हमला" पर "आपरेशन सिंदूर" भी एक "सोफिया" नाम की शेरनी ने नेत्रत्व दिया था जो बहुत ज्यादा लोग को इंसाफ दिलाने पर कामयाब हो चुका था।

कई जमाने पहले भी "राणी लक्ष्मी बाय" जैसे महा शेरनी अपने ताकत को दुनिया के सामना दिखाया था। जब "अंग्रेजों" ने उसका पालस पर आग लगाया, तब अपने पिछवाड़े में अपने बच्चों को बाँदकर एक हाथ पर धिया रहकर उन्हें लड़ा था।

केरल के नारियों को आर्थिक व्यवस्था पर पूरे तरीके से शामिल करने के लिए "सरकार" अपने छोटी और बड़ी कोशिश जारी कर कर रहा है। महिलाओं का आत्म विश्वास बढ़ाने के लिए "महिला सुरक्षा के लिए आक्ट" भी भारतीय संविधान



संविधान ने दिया है।

"कैरल" के महिलाओं का आत्म विश्वास बढ़ाकर उन्को नौकरी में शामिल करने के लिए कैरल सरकार ने बहुत ज्यादा भूमिका अब निभा रहा है। "वुमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप" उन महिलाओं का छोटे-मोटे सार्वरी मिलने का क्षेत्र है। आज पक्षे पडोसि नारियां मिलकर "कुडुंबश्री" चला रहा है जिस से उन्हे अपने छोटे-छोटे इराकों को पूरी करने के लिए मदद करते है।

"न 3 पल्ल्स ऑफ प्रम्पवरमेट" ने नारियो को उनके हक्क के बारे में समझा देता है। खुद के लिए कदम उठाने के लिए यह लेख वह नारियो को बहुत ज्यादा प्रेरित करते है।

"कैरल हरित कर्म सेवा" पद्धि में नारियो को ही काम के लिए चुना गया है। क्योंकि सरकार के साथ-साथ और पुरुषों को भी महिलाओं का आगे आने का महत्व समझ में आ चुका है।

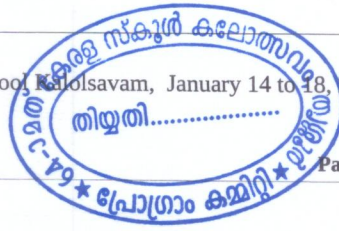
छोटी और बड़ी इलाकों अबी नारियां राजनीतिक अधिकार के लिए भी लड़ रहा है।

यहाँ तक हमारा प्रसिद्ध "इराऊपती मुरमू" भी एक महिला है जिसने एक महिला या पुरुष होने तरफ से नहीं, बल्कि बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक होने के हिसाब से अपना कर्त्तव्य पूरे इमादारी के साथ निभा रहा है।

"जापान, चैना" जैसे विकसित देश में पुरुष और महिला, दोनों ४ बराबर काम करते हैं। हर घर के हर महिला और मर्द अपने देश के आर्थिक व्यवस्था को बढ़ाने के द्वारा में हैं।

"नासा" जैसे बड़ी-बड़ी संकठन में भी आज नारियाँ काम कर रहा हैं। वैज्ञानिक, अभिनेत्री, पुलिस, अध्यापिका, द्रावल फजसी जैसे काम भी अब स्त्रियों बहुत अच्छे से कर रहा हैं।

पहले के जमाने में महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग सालरी होती थी- एक ही काम करने के बावजूद भी। लेकिन, अब अकल ठिकाने लाने से बराबर काम करने को बराबर सालरी भी दे जा रही हैं। अब नौकरी के क्षेत्र में मर्द या महिला- दोनों मापने बही रखना



है।

हर पुरुष की तरह अब महिलाओं को भी रात की ~~इस~~ काम दी जाती है। यह पुलिस और नेवी और भारतीय सेना में भी देखा है। क्योंकि आज के भारतीय संविधान यह मानते हैं कि काम करने के समय, बर्से वही अपने शरीर पर होने तक के समय कोई भी मर्द या महिला नहीं होगी, सिर्फ और सिर्फ ~~इस~~ इन्सान होगी।

महिलाओं के यह सफलता आज भी कुछ घमंडों को असामान्य लगता है और वे लोग स्त्रियों को बेकाम और बेघर होना देखना चाहते हैं। "महान्मा गांधी" ने कहा हुआ वाक्य: "आपका भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आज आप क्या कर रहा रहे।" यही सोच दिल पर लेकर नारियाँ अपने भविष्य को महफूज रखने के लिए उनके पूरे कोशिश कर रहा हैं।

"ए. ए." जैसे के "चार जी. पी. टी, जेमिन, मेटा ए" जैसे तकनीकी विकास ने महिलाओं को ऑफलाइन और डिजिटल बोध भी दे दिया है। इसके कारण अब

നാരിന് സ്വയം റിജിസ്റ്റർ ചെയ്യേണ്ട, और फ.से संबंधित और काम भी करने का सचम रखना है।

"जेन.जी" 1997 से 2012 के बीच जन्मे हैं, जबकि "जेन.आल्फा" 2013 से 2026 (पानी की वर्तमान) के बीच जन्मे हैं। "जेन.सी" ग्लोबल कम्युनिटी और इंटरनेट के साथ अपने जीवन बिताया। जबकि जेन.आल्फा के पैदा होने के समय ही हाई इंटरनेट और डिजिटल डिवाइस मौजूद थे। पानी उनके जन्म पूरे डिजिटल युग में हुआ था। नारियों को देखा जाय तो जेन.सी से भी ज्यादा काम करने का ताकत जेन.आल्फा रखता है। क्योंकि उनके कक्षों में अबी भी रोजगारी की महत्व को सबसे ऊँचाई पर रखा हुआ है। यह उन्को अकेले कोई भी बड़ी काम चुटकियों से निपटाने का ताकत देता है।

जेन.आल्फा और नारियों से भी ज्यादा फे.क्यू पायी हुयी है जिसके वजह से उन्को अपने भविष्य के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है।

हर देश के तरह हमारा भारत को भी

महिला संकठन को आगे निकलवाना है। और इसलिइ सरकार के साथ-साथ हर किसी कोई भी इसका महत्व न जानना आवश्यक है।

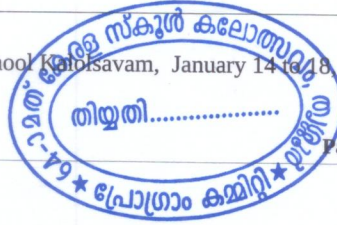
अब भी भारत में महिला नौकरी करने वाली महिला पुरुषों से कम है। और इन स और यह लेवल बढ़ाना हर किसी का काम है। बास कर कर महिलाओं का। महिलाओं का इज्जत समाज में तभी बढ़ जाइगा जब वे उनके लिए आवाज उठाना शुरू करते है और अपने के लिए नौकरी करना शुरू करने लगता है। नारिये पहले भी नाकत्वार थी आज भी है और कल भी रहूंगा। यह आत्म विश्व विश्वास उन्को भी रख लेना चाहिए।

इस निबंध के अंत में, महिलाओं का महत्व और समाज को आगे बढ़ाने में उनका भूमिका नि भी भी बहुत अच्छे से दिखाई देता है। और अब भी कुछ महिला अपने आप को नौकरी करने के लिए नाकत्वार नही समझते है। यह बड़ी समस्या है। अब, यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या का प्रभाव केवल नारियों पर नही,

বলিক পূরে সমাজ আর রাষ্ট্র পর গহরাই সে
 পড়না হৈ। কুনিখা কে কই শোধ্য বনাতৈ হৈ কি
 হর খাল লাখো লোগ ইন সমস্যাখো সমস্যাখো
 কে কারণ মানসিক, শারীরিক আর সামাজিক রূপ
 সে প্রভাবিত হোনে হৈ। আর সমস্যা রহতে কদম ন
 উঠাও জাও তো আনে বালী পীড়িখো কো ভী
 দুস্কা আর বড়া দুস্পরিণাম ইলনা পড় সেকতা
 হৈ। আজ কে সমস্যা মে পহু সচ্ছ হৈ কি নারি-
 নারিখো কে সমস্যাও বহু রহা হৈ। লেকিন, পহু ভী
 উতনা হী সচ্ছ হৈ কি অ জাগরুক নাগরিক, সঠী
 দ্বিগা আর মজবুত সংকল্প কিসী ভী সমস্যা
 কা সমাধান বনা সেকতা হৈ। "মহাত্মা গান্ধী" কা
 এক সোচ পহৌ বিল্কুল সার্থক হৈ: "আপ কুনিখা
 মে জো বদলাব দেখনা চাহতে হৈ, পহলে বহু বদলাব
 খুদ বনিও।" পহী সোচ কো আধার বনাওক হমে
 অপনে সোচ, ব্যবহার, জিম্মেদারিগা আর দৈনিক
 কার্যো পর সমা সকারাত্মক পরি পরিবর্তন
 লানে কি আবশ্যকতা হৈ। অন্ত মে, পহু নিষ্পর্ষ
 কেবল শব্দো মে সীমিত ন রাখতে হুবে, হমে এক
 দৃঢ় সংকল্প লেনা চাহিও: "কি মৈ" জিম্মেদারী সে



Item Code: 645



Participant Code: 637

सोचेंगे, सही कदम उठाएंगे, महिलाओं को भी वही
इज्जत देंगे जो पुरुषों को देना था और अपने
देशों को देश को बुराईयों से मुक्त करकर साफ़
और सुंदर, फकता भरी इसी हुई देश जैसे बनाऊंगी।
तब ही सही मापने में हर किसी को बराबर
का हक्क मिलेंगे।